



NEERAJ®

MEC - 107

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विकास

(International Trade and Development)

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Ved Prakash Sharma



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

Content

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विकास (International Trade and Development)

Question Paper—June-2024 (Solved).....	1
Sample Question Paper-1 (Solved)	1
Sample Question Paper-2 (Solved)	1
Sample Question Paper-3 (Solved)	1

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
--------------	-----------------------------------	-------------

खंड-1 : अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धांत (THEORY OF INTERNATIONAL TRADE)

1. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रतिष्ठित और नव-प्रतिष्ठित सिद्धांत.....	1
(Classical and Neo-Classical Theories of International Trade)	
2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से लाभ	14
(Gains from International Trade)	

खंड-2 : अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के आधुनिक सिद्धांत (MODERN THEORIES OF INTERNATIONAL TRADE)

3. अंतरा-उद्योग व्यापार	27
(Intra-Industry Trade)	
4. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धांतों की वैकल्पिक व्याख्याएँ	36
(Alternative Explanations of International Trades)	

खंड-3 : मुक्त व्यापार की तुलना में संरक्षणवाद (FREE TRADE VERSUS PROTECTIONISM)

5. संरक्षण की नीतियाँ	45
(Policies of Protectionism)	
6. संरक्षणवाद के उपकरण	56
(Instruments of Protectionism)	

खंड-4 : विनिमय दर और भुगतान संतुलन (EXCHANGE RATE AND BALANCE OF PAYMENTS)

7. विनिमय दर व्यवस्थाएँ	68
(Exchange Rate Regimes)	

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
8.	भुगतान संतुलन और उसके संघटक (Components of Balance of Payments)	81
9.	असंभव त्रयी : वैकल्पिक परिदृश्य (Impossible Trinity: Alternative Scenarios)	94
10.	भुगतान संतुलन संबंधी दृष्टिकोण (Approaches to Balance of Payments)	102
खंड-5 : अंतर्राष्ट्रीय वित्त (INTERNATIONAL FINANCE)		
11.	अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजार और लिखत (International Financial Markets and Instruments)	111
12.	वित्तीय और मुद्रा संकट (Financial and Currency Crises)	122
खंड-6 : भूमंडलीकरण (GLOBALISATION)		
13.	बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली : विकास और चुनौतियाँ (Multilateral Trading System: Development and Challenges)	132
14.	क्षेत्रीय व्यापार समझौते (Regional Trading Agreements)	140
15.	भारत और बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली (India and Multilateral Trading System)	148
खंड-7 : व्यापार, वृद्धि और विकास (TRADE, GROWTH AND DEVELOPMENT)		
16.	व्यापार और आर्थिक विकास गठजोड़ (Debate on the Trade and Growth Nexus)	157
17.	व्यापार और पर्यावरण (Trade and Environment)	164
खंड-8 : भारत का विदेश व्यापार : नीति और चुनौतियाँ (INDIA'S FOREIGN TRADE: POLICY AND CHALLENGES)		
18.	भारत की विदेश व्यापार नीति (India's Foreign Trade Policy)	173
19.	भारत का व्यापार : रुझान, संरचना और चुनौतियाँ (India's Trade: Trends, Composition and Challenges)	184



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विकास
(International Trade and Development)

MEC-107

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : प्रत्येक भाग में से प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए।

खण्ड-क

नोट : इस भाग से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. (क) दो देशों के बीच 'मुक्त व्यापार' को व्यापार न होने से बेहतर क्यों माना जाता है? आलेख की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-25, प्रश्न 10

(ख) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के रिकार्डियन सिद्धांत को एक रूपरेखा के रूप में उपयोग करते हुए स्पष्ट करें कि राष्ट्रों को व्यापार में संलग्न होने से लाभ कैसे प्राप्त होता है?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-7, प्रश्न 5

प्रश्न 2. किन कारकों ने अंतरा-उद्योग व्यापार के विकास को प्रेरित किया? व्याख्या करें। यह सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की हमारी समझ में कैसे योगदान देता है?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-27, 'अंतरा-उद्योग व्यापार सिद्धांत'

प्रश्न 3. क्षेत्रीय व्यापार समझौतों (RTAs) के विकास के बारे में बताएँ और उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले स्थिर और गतिशील लाभों की व्याख्या करें। (RTAs) के ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज विस्तार के बीच अंतर करें और उनके अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर होने वाले प्रभाव को समझाएँ।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-14, पृष्ठ-144, प्रश्न 4, पृष्ठ-145, प्रश्न 5, पृष्ठ-146, प्रश्न 6 तथा प्रश्न 7

प्रश्न 4. मान लीजिए कि कोई देश मोटर गाड़ी आयात करता है। निम्नलिखित को आरेख की सहायता से समझाइए-

(क) घरेलू निर्माताओं और ग्राहकों की क्या लाभ-हानि होगी?

(ख) जब विश्लेषण में बाह्यताओं को भी जोड़ा जाए, तो क्या लाभ-हानि होगी?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-17, पृष्ठ-164, 'व्यापार और पर्यावरण : सहलग्नता'

खण्ड-ख

नोट : इस भाग से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रतिरूप की व्याख्या करने के लिए आप प्रौद्योगिकीय अंतराल मॉडल को किस प्रकार लागू करेंगे? समझाएँ।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-36, 'प्रौद्योगिकीय अंतराल एवं उत्पाद जीवन चक्र सिद्धांत', पृष्ठ-38, प्रश्न 1

प्रश्न 6. उत्पादन के स्थान और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर पर्यावरण मानकों और रसद लागत के प्रभाव की जाँच करें।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-42, प्रश्न 7

प्रश्न 7. एक छोटे देश और एक बड़े देश के लिए व्यापार की मात्रा और व्यापार की शर्तों पर टैरिफ के प्रभावों का अन्वेषण करें। आरेख की सहायता से स्पष्ट करें।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-62, प्रश्न 5, प्रश्न 6

प्रश्न 8. पूँजीगत खाता परिवर्तनीयता (CAC) क्या है? पूँजीगत और चालू खाता परिवर्तनीयता किस प्रकार अलग हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-100, प्रश्न 9

प्रश्न 9. विभिन्न प्रकार के वित्तीय बाजारों को सूचीबद्ध करें। अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों और उपकरणों के महत्त्व पर प्रकाश डालें।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-116, प्रश्न 4, पृष्ठ-117, प्रश्न 6

प्रश्न 10. मुंडेल-फ्लेमिंग मॉडल के प्रमुख घटकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-97, प्रश्न 2, पृष्ठ-98, प्रश्न 3

प्रश्न 11. भारत अपने विदेशी व्यापार में किन प्रमुख चुनौतियों का सामना करता है? ये चुनौतियाँ वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रभावी ढंग से संलग्न होने की देश की क्षमता को कैसे प्रभावित करती हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-19, पृष्ठ-194, प्रश्न 4

प्रश्न 12. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) असंभव त्रयी

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-97, प्रश्न 1

(ख) भुगतान शेष

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-84, प्रश्न 1 ■■

Sample
QUESTION PAPER - 1

(Solved)

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विकास
(International Trade and Development)

MEC-107

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : प्रत्येक भाग में से प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए।

खण्ड-क

नोट : इस भाग से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. (क) नवोदित उद्योग से आप क्या समझते हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-51, प्रश्न 9

(ख) व्यापार संतुलन के भंग होने से आपका अभिप्राय क्या है?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-52, प्रश्न 11

प्रश्न 2. टैरिफ बाधाओं की विभिन्न श्रेणियाँ बताइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-61, प्रश्न 3

प्रश्न 3. ब्रेटन-वुड्स काल से अभी तक की विनिमय दर व्यवस्था की छानबीन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-72, प्रश्न 5

प्रश्न 4. (क) असंभव त्रयी की उपेक्षा के कारण आने वाले वित्तीय संकट के तीन उदाहरण बताइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-99, प्रश्न 6

(ख) हम असंभव त्रयी का अध्ययन क्यों करते हैं? इसकी व्यावहारिक सार्थकता बताइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-99, प्रश्न 8

खण्ड-ख

नोट : इस भाग से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. खपत के दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-104, प्रश्न 2

प्रश्न 6. ग्लोबल डिपॉजिटरी रसीद (रिसिप्ट) (जीडीआर) क्या है?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-118, प्रश्न 9

प्रश्न 7. 2007 का वैश्विक वित्तीय संकट कैसे शुरू हुआ?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-127, प्रश्न 2

प्रश्न 8. विश्व व्यापार संगठन के पहले मंत्रिस्तरीय सम्मेलन का सारांश प्रस्तुत करें।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-13, पृष्ठ-137, प्रश्न 4

प्रश्न 9. जीएसटीपी क्या है? साओ पाउलो दौर की उपलब्धियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-15, पृष्ठ-153, प्रश्न 3

प्रश्न 10. अर्थव्यवस्था में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की दर निर्धारित करने वाले कारकों को समझना क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-16, पृष्ठ-159, प्रश्न 1

प्रश्न 11. पर्यावरण संबंधी कुजनेट्स वक्र परिकल्पना पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-17, पृष्ठ-167, प्रश्न 2

प्रश्न 12. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए—
(क) मार्शल-लर्नर शर्त

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-104, प्रश्न 1

(ख) एट्रेस गेम

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-14, पृष्ठ-142, 'एट्रेस गेम'

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विकास (International Trade and Development)

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रतिष्ठित और नव-प्रतिष्ठित सिद्धांत (Classical and Neo-Classical Theories of International Trade)

1

परिचय

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांतों को समझने से पहले यह जानना आवश्यक है कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार क्या है तथा इसमें क्या किया जाता है? साधारण शब्दों में कहा जाए तो व्यापार का अभिप्राय मुद्रा के बदले वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदना-बेचना है। जब यह क्रय-विक्रय अपने देश में होता है, तो उसे घरेलू व्यापार कहा जाता है, परंतु जब अलग-अलग देशों के क्रेता-विक्रेता के मध्य वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान होता है तो उसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कहा जाता है। अब सवाल यह है कि यह व्यापार होता ही क्या है? इसका सीधा सा उत्तर है कि कोई भी देश अपनी जरूरत की प्रत्येक वस्तु का उत्पादन नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में देश एक-दूसरे से संपर्क करके परस्पर वस्तुओं का विनिमय करने लगते हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

वणिक्वादी सिद्धांत

वाणिक्वाद 16वीं एवं 17वीं शताब्दी में यूरोप में प्रचलित एक आर्थिक सिद्धान्त तथा व्यवहार का नाम है, जिसके अन्तर्गत राज्य की शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से राष्ट्र की अर्थव्यवस्थाओं का सरकारों द्वारा नियंत्रण को प्रोत्साहन मिला। व्यापारिक क्रांति ने एक नवीन आर्थिक विचारधारा को जन्म दिया। इसका प्रारम्भ सोलहवीं शताब्दी में हुआ। इस नवीन आर्थिक विचारधारा को वाणिज्यवाद, वणिक्वाद या व्यापारवाद कहा गया है। फ्रांस में इस विचारधारा को कोलबर्टवाद और जर्मनी में केमरलिज्म कहा गया। 1776 ई. में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने भी अपने ग्रन्थ 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' में इसका विवेचन किया है। इस सिद्धांत का मानना है कि देशों को चाहिए कि वह निर्यात को बढ़ावा दें तथा आयात को हतोत्साहित करें तथा सोने एवं चाँदी जैसी कीमती वस्तुएँ प्राप्त

करना देश के हित में होता है। 16वीं से 18वीं शताब्दी तक प्रमुख व्यापारिक देशों की आर्थिक व्यवस्था का आधार वणिक्वाद ही था।

निरपेक्ष लाभ का सिद्धांत

एडम स्मिथ ने 1776 में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का मूल सिद्धांत प्रस्तुत किया। स्मिथ ने तर्क दिया कि उन उत्पादों में विशेषज्ञता हासिल करना, जिनमें प्रत्येक देश को पूर्ण लाभ है तथा फिर उन उत्पादों का व्यापार करना सभी देशों को बेहतर स्थिति में ला सकता है, बशर्ते कि उनमें से प्रत्येक के पास कम-से-कम एक ऐसा उत्पाद हो, जिसमें वे अन्य देशों पर पूर्ण लाभ रखते हों। निरपेक्ष लाभ यह बताता है कि व्यक्तियों, व्यवसायों और देशों के लिए एक-दूसरे के साथ व्यापार करना क्यों सार्थक है। चूँकि प्रत्येक को कुछ वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में लाभ होता है, इसलिए दोनों संस्थाएँ विनिमय से लाभान्वित हो सकती हैं। इस सिद्धांत को इस उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं—

माना कि 'क' और 'ख' देश 200 श्रमिक लगाकर गेहूँ और चावल का उत्पादन कर रहे हैं। 1 टन गेहूँ के उत्पादन के लिए 'क' देश 10 श्रमिक और एक टन चावल के लिए 20 श्रमिक लगाता है, जबकि 1 टन गेहूँ के उत्पादन के लिए 'ख' देश 25 श्रमिक और 1 टन चावल के लिए 5 श्रमिक लगाता है।

तालिका : उत्पादक देशों में प्रयुक्त श्रमिक

	'क' देश (संख्या)	'ख' देश (संख्या)
गेहूँ	10	25
चावल	20	5

इससे स्पष्ट है कि गेहूँ के उत्पादन में निरपेक्ष लाभ की स्थिति 'क' देश को प्राप्त है, क्योंकि वह 'ख' देश की तुलना में 1 टन गेहूँ के उत्पादन के लिए कम श्रमिक लगाता है। दूसरी ओर 'ख' देश को चावल के उत्पादन में निरपेक्ष लाभ की स्थिति प्राप्त है, क्योंकि वह 'क' देश की तुलना में 1 टन चावल के

2 / NEERAJ : अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विकास

उत्पादन के लिए कम श्रमिक लगाता है। यदि इन दोनों देशों के बीच कोई व्यापार नहीं हो रहा है एवं यदि गेहूँ और चावल के उत्पादन के लिए संसाधनों का एक समान इस्तेमाल हो रहा है तो 'क' देश 10 टन गेहूँ तथा 5 टन चावल पैदा करेगा, जबकि 'ख' देश 4 टन गेहूँ तथा 20 टन चावल उत्पादन करेगा।

तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत

डेविड रिकार्डों ने 1817 में तुलनात्मक लाभ नियम बनाया था। इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रों के बीच अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारणों को स्पष्ट करना था, भले ही किसी के कारखाने, श्रमिक, व्यवसाय और कंपनियाँ प्रत्येक वस्तु के उत्पादन में अधिक प्रभावी हों। यदि कोई देश कई उत्पादों का सबसे मजबूत उत्पादक है, तो तुलनात्मक लाभ सिद्धांत यह सुझाव देगा कि उन्हें उस उत्पाद पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिसमें उन्हें सबसे अधिक लाभ है। अन्य देश अन्य उत्पादों के उत्पादन को अपने हाथ में ले सकते हैं, जिससे समय और श्रम की बचत होगी।

उन्होंने प्रदर्शित किया कि यदि दो वस्तुओं का उत्पादन करने में सक्षम दो देश मुक्त बाजार में संलग्न होते हैं (यद्यपि इस धारणा के साथ कि पूँजी और श्रम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नहीं चलते हैं), तो प्रत्येक देश उस वस्तु का निर्यात करके अपने समग्र उपभोग में वृद्धि करेगा, जिसके लिए उसके पास तुलनात्मक लाभ है, जबकि अन्य वस्तु का आयात करेगा, बशर्ते कि दोनों देशों के बीच श्रम उत्पादकता में अंतर मौजूद हों। माना कि दो देशों 'क' और 'ख' के पास 200-200 श्रमिक हैं, जिनमें से वे 100 को गेहूँ तथा 100 को चावल में लगाकर उत्पादन कर रहे हैं।

तालिका : व्यापार से पहले 'क' और 'ख' देश में गेहूँ और चावल के उत्पादन की मात्रा

	'क' देश (टन में)	'ख' देश (टन में)
गेहूँ	20	15
चावल	40	10

इस तालिका से स्पष्ट है कि 'क' और 'ख' देश समान संख्या में श्रमिक लगाकर गेहूँ की क्रमशः 20 और 15 इकाइयों का उत्पादन कर सकते हैं। इस प्रकार 'क' देश को दोनों वस्तुओं के उत्पादन में निरपेक्ष लाभ प्राप्त है। इसी प्रकार 'ख' देश भी गेहूँ तथा चावल उत्पादन के लिए उतने ही श्रमिक लगाता है तथा उसका गेहूँ का उत्पादन चावल के उत्पादन से ज्यादा है। इससे 'ख' देश को गेहूँ उत्पादन में सापेक्ष लाभ प्राप्त है।

हेक्शर-ओहलिन लाभ का सिद्धांत

हेक्शर-ओहलिन ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के आधुनिक सिद्धांत को प्रस्तुत किया। जहां पर रिकार्डों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का समापन होता है, वहां से हेक्शर-ओहलिन सिद्धांत का प्रारंभ होता है। हेक्शर-ओहलिन का सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि

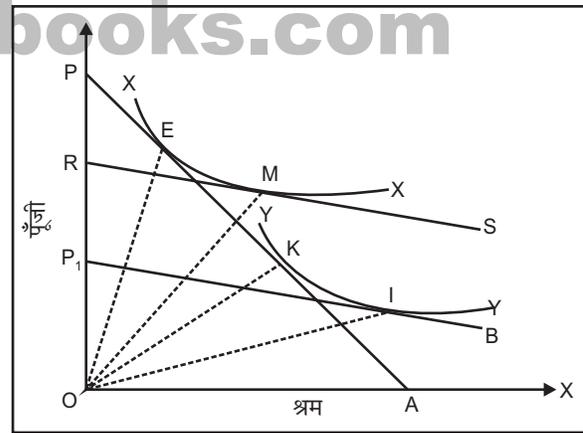
देशों के पास अलग-अलग संसाधन हैं। इन संसाधनों में भूमि, श्रम और पूँजी (जिसमें मशीनें और कारखाने शामिल हैं) शामिल हो सकते हैं। यह सिद्धांत बताता है कि देश उन वस्तुओं का निर्यात (दूसरे देशों को बेचते हैं) करते हैं, जो उनके प्रचुर संसाधनों का उपयोग करते हैं और उन वस्तुओं का आयात (दूसरे देशों से खरीदते हैं) जो उनके दुर्लभ संसाधनों का उपयोग करते हैं।

हेक्शर-ओहलिन का सिद्धांत निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है-

1. देश उत्पादन के विभिन्न कारकों, जैसे-श्रम, भूमि और पूँजी से संपन्न हैं।
2. उत्पादन के कारक एक देश के भीतर गतिशील होते हैं, लेकिन देशों के बीच नहीं।
3. उत्पादन के कारकों के विभिन्न संयोजनों का उपयोग करके वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।
4. जो देश अपने प्रचुर उत्पादन के कारकों का गहनता से उपयोग करते हैं, वे सामान उत्पादन में विशेषज्ञता रखते हैं।

यह सिद्धांत विभिन्न देशों में उपलब्ध उत्पादन के कारकों के अनुपात और विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले उनके अनुपात के बीच अंतर्संबंध पर जोर देता है (उत्पादन के कारकों की बंदोबस्ती का सिद्धांत)।

साधन की तुलनात्मक प्रचुरता का कीमत संबंधी मानदंड-कीमत संबंधी नियम के अनुसार सापेक्ष कारक-प्रचुरता को परिभाषित करने के लिए वैकल्पिक मानदंड कीमत मानदंड है। यह मानदंड बताता है कि जिस देश में पूँजी अपेक्षाकृत सस्ती है और श्रम अपेक्षाकृत महंगा है, वह पूँजी-प्रचुर है और इसके विपरीत, चाहे उनके पास पूँजी और श्रम की भौतिक मात्रा कुछ भी हो।



एच-ओ मॉडल की आकृति व्याख्या

देश A को अपेक्षाकृत पूँजी-प्रचुर मात्रा में कहा जा सकता है, यदि $(P_{KA}/P_{LA}) < (P_{KB}/P_{LB})$ । यहां P कीमतों को दर्शाता है। K और L क्रमशः पूँजी और श्रम को दर्शाते हैं। A और B क्रमशः देश A और B को दर्शाते हैं। इसी प्रकार देश A को

श्रम-प्रचुर और पूँजी-दुर्लभ माना जा सकता है, यदि $(P_{LA}/P_{KA}) < (P_{LB}/P_{KB})$.

अब मान लीजिए कि देश A में पूँजी प्रचुर मात्रा में है और श्रम की कमी है, तो देश B में ब्याज दरों और मजदूरी दरों की तुलना में ब्याज दरें अपेक्षाकृत कम होंगी और मजदूरी दरें अपेक्षाकृत अधिक होंगी, इसलिए देश A पूँजी का उत्पादन और निर्यात करने का निर्णय लेगा।

स्टोलपर-सैमुएल्सन प्रमेय

स्टोलपर-सैमुएल्सन प्रमेय हेक्शर-ओहलिन व्यापार सिद्धांत में एक प्रमेय है। यह उत्पादन की सापेक्ष कीमतों और सापेक्ष कारक रिटर्न के बीच संबंध का वर्णन करता है-विशेष रूप से, वास्तविक मजदूरी और पूँजी पर वास्तविक रिटर्न। जोन्स और जोस शीनकमैन दर्शाते हैं कि बहुत सामान्य परिस्थितियों में कारक रिटर्न आउटपुट कीमतों के साथ बदलते हैं जैसा कि प्रमेय द्वारा दर्शाया गया है। यदि बढ़े हुए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के तहत वास्तविक रिटर्न में बदलाव पर विचार किया जाए तो प्रमेय का एक मजबूत निष्कर्ष यह है कि दुर्लभ कारक का रिटर्न कम हो जाएगा, अन्य चीजें समान रहने पर। प्रमेय का एक अतिरिक्त मजबूत परिणाम यह है कि दुर्लभ कारक के लिए एक मुआवजा मौजूद है, जो इस प्रभाव को दूर करेगा और बढ़ा हुआ व्यापार पैरेटो इष्टतम बनाएगा। हेक्शर-ओहलिन मॉडल एक दो-कारक मॉडल था, हालांकि श्रमिक उत्पादकता के कई वर्गों के साथ अधिक परिष्कृत मॉडल प्रत्येक श्रम वर्ग के भीतर स्टोलपर-सैमुएल्सन प्रभाव उत्पन्न करते हुए दिखाए गए हैं-उच्च कौशल वाले देश में व्यापारिक वस्तुओं का उत्पादन करने वाले अकुशल श्रमिकों की स्थिति अंतर्राष्ट्रीय व्यापार बढ़ने के साथ खराब हो जाएगी, क्योंकि उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विश्व बाजार के सापेक्ष, एक अकुशल प्रथम विश्व उत्पादन-लाइन श्रमिक पूँजी की तुलना में उत्पादन का कम प्रचुर कारक है। सैमुएल्सन प्रमेय, कारक मूल्य समीकरण प्रमेय से निकटता से जुड़ा हुआ है, जो बताता है कि अंतर्राष्ट्रीय कारक गतिशीलता की परवाह किए बिना, कारक कीमतें उन देशों में समान होंगी, जो प्रौद्योगिकी में भिन्न नहीं हैं।

साधन कीमत समानीकरण प्रमेय

यह प्रमेय मानता है कि दो वस्तुएं और उत्पादन के दो कारक हैं। उदाहरण के लिए पूँजी और श्रम। प्रमेय की अन्य प्रमुख धारणाएँ हैं कि प्रत्येक देश वस्तुओं के मुक्त व्यापार के कारण समान वस्तुओं की कीमतों का सामना करता है। उत्पादन के लिए एक ही तकनीक का उपयोग करता है और दोनों वस्तुओं का उत्पादन करता है। महत्वपूर्ण रूप से इन धारणाओं के परिणामस्वरूप कारक गतिशीलता की आवश्यकता के बिना कारक मूल्य देशों में समान हो जाते हैं, जैसे कि श्रम का प्रवास या पूँजी प्रवाह।

इस सिद्धांत का मानना है कि जब मुक्त व्यापार की ओर बढ़ने वाले देशों के बीच उत्पादित वस्तुओं की कीमतें समान हो जाती

हैं, तो कारकों (पूँजी और श्रम) की कीमतें भी देशों के बीच समान हो जाएंगी। दो देशों के आर्थिक रूप से एकीकृत होने और प्रभावी रूप से एक बाजार बनने से पहले जो भी कारक सबसे कम कीमत प्राप्त करता है, वह अर्थव्यवस्था में अन्य कारकों के सापेक्ष अधिक महंगा हो जाएगा, जबकि सबसे अधिक कीमत वाले कारक सस्ते हो जाएंगे।

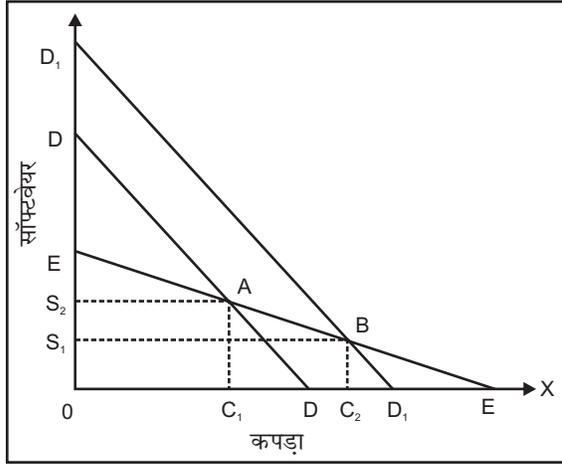
पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाजार में उत्पादन के किसी कारक पर प्रतिफल उसकी सीमांत उत्पादकता के मूल्य पर निर्भर करता है। श्रम जैसे कारक की सीमांत उत्पादकता, बदले में उपयोग किए जा रहे श्रम की मात्रा के साथ-साथ पूँजी की मात्रा पर निर्भर करती है। जैसे-जैसे किसी उद्योग में श्रम की मात्रा बढ़ती है, श्रम की सीमांत उत्पादकता घटती जाती है। जैसे-जैसे पूँजी की मात्रा बढ़ती है, श्रम की सीमांत उत्पादकता बढ़ती जाती है। अंत में, उत्पादकता का मूल्य बाजार में वस्तु द्वारा नियंत्रित उत्पादन मूल्य पर निर्भर करता है।

साधन कीमत समानीकरण प्रमेय का एक अक्सर उद्धृत उदाहरण मजदूरी है। जब दो देश एक मुक्त व्यापार समझौते में प्रवेश करते हैं, तो दोनों देशों में समान नौकरियों के लिए मजदूरी एक-दूसरे के करीब होती है। यह परिणाम पहली बार गणितीय रूप से हेक्शर-ओहलिन मॉडल मान्यताओं के परिणाम के रूप में सिद्ध किया गया था। इस सिद्धांत की खोज स्वतंत्र रूप से 1933 में अब्बा लर्नर ने की थी, लेकिन इसे बहुत बाद में 1952 में प्रकाशित किया गया था। 'लर्नर आरेख' अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धांत को पढ़ाने में एक महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक उपकरण बना हुआ है।

रिबजिंस्की प्रमेय

रिबजिंस्की प्रमेय में कहा गया है कि स्थिर सापेक्ष वस्तुओं की कीमतों पर एक कारक की बंदोबस्ती में वृद्धि से उस क्षेत्र में उत्पादन का आनुपातिक विस्तार से अधिक हो जाएगा, जो उस कारक का गहनता से उपयोग करता है और दूसरे अच्छे के उत्पादन में पूर्ण गिरावट आएगी। यह प्रमेय इन कारकों में से एक की आपूर्ति में वृद्धि के परिणाम के साथ-साथ एक अच्छे के उत्पादन पर प्रभाव की व्याख्या करता है, जो एक विरोधी कारक पर निर्भर करता है। अंततः, दोनों देशों में बाजार शक्तियां प्रणाली को इनपुट कीमतों जैसे कि मजदूरी (कारक मूल्य समानता की स्थिति) के संबंध में उत्पादन की समानता की ओर लौटाएंगी।

रिबजिंस्की प्रमेय प्रदर्शित करता है कि पूर्ण रोजगार कायम रहने पर बंदोबस्ती में परिवर्तन माल के आउटपुट को कैसे प्रभावित करता है। यह प्रमेय हेक्शर-ओहलिन मॉडल के संदर्भ में पूँजी निवेश, आव्रजन और उत्प्रवास के प्रभावों का विश्लेषण करने में उपयोगी है। मान लीजिए कि उत्पादन शुरू में बिंदु ए पर उत्पादन संभावना सीमा (पीपीएफ) पर होता है।



रिबजिंस्की प्रमेय की चित्रमय प्रस्तुति

मान लीजिए कि श्रम बंदोबस्ती में वृद्धि हुई है। इससे श्रम बाधा में बाहरी बदलाव आएगा। पीपीएफ और इस प्रकार उत्पादन बिंदु बी पर स्थानांतरित हो जाएगा। कपड़ों का उत्पादन, श्रम प्रधान वस्तु, C_1 से C_2 तक बढ़ जाएगी। कारों का उत्पादन, पूँजी-प्रधान वस्तु, S_1 से S_2 तक गिर जाएगी।

यदि पूँजी की बंदोबस्ती बढ़ती है तो पूँजी की बाधा दूर हो जाएगी, जिससे कार उत्पादन में वृद्धि होगी और कपड़ों के उत्पादन में कमी आएगी। चूँकि श्रम की बाधा पूँजी की बाधा से अधिक तीव्र है, कारों पूँजी-गहन हैं और कपड़े श्रम-गहन हैं। सामान्य तौर पर, किसी देश की किसी कारक की बंदोबस्ती में वृद्धि से उस वस्तु के उत्पादन में वृद्धि होगी, जो उस कारक का गहनता से उपयोग करती है और अन्य वस्तु के उत्पादन में कमी होगी।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-घरेलू व्यापार-घरेलू व्यापार से तात्पर्य ऐसे लेन-देन से है, जो देश की भौगोलिक सीमाओं के भीतर होते हैं। यह एक कॉर्पोरेट इकाई है, जो किसी देश के भीतर अपनी वाणिज्यिक गतिविधि संचालित करती है। आंतरिक व्यापार या गृह व्यापार एक ही चीज के लिए अन्य शब्द हैं। फर्म के निर्माता और उसके ग्राहक दोनों देश में रहते हैं। घरेलू लेन-देन में, खरीदार और विक्रेता दोनों एक ही देश के नागरिक होते हैं, इसलिए व्यापार समझौता देश की प्रथाओं, कानूनों और सम्मेलनों पर आधारित होता है। एक घरेलू फर्म के कई फायदे हैं, जैसे कि सस्ते लेन-देन की लागत, माल के उत्पादन और बिक्री के बीच कम समय, कम परिवहन लागत और छोटी-छोटी कंपनियों को प्रोत्साहन, कुछ नाम।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार-अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में विनिर्माण और व्यापार स्वदेश के बाहर होता है। अंतर्राष्ट्रीय या बाहरी व्यापार में सीमा पार वाणिज्य से जुड़े किसी भी आर्थिक संचालन को

शामिल किया जाता है। इसमें दो या दो से अधिक राष्ट्रों से जुड़ी सभी व्यावसायिक गतिविधियाँ शामिल हैं, जैसे-बिक्री, निवेश और रसद। एक बहुराष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय निगम वह है, जो अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य करता है। इन उद्यमों के पास दुनिया भर से विविध उपभोक्ता आधार हैं और वे संसाधनों के लिए किसी एक देश पर निर्भर नहीं हैं। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार क्रॉस-नेशनल वाणिज्य और निवेश की सुविधा प्रदान करता है।

घरेलू व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बीच अंतर-घरेलू व्यापार को एक ऐसी कंपनी के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसका आर्थिक लेन-देन देश की सीमाओं के भीतर किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को एक ऐसे व्यापार के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो किसी एक देश तक सीमित नहीं है यानी ऐसा व्यापार, जो दुनिया भर के कई देशों के साथ लेन-देन करता है। घरेलू व्यापार के संचालन का क्षेत्र सीमित होता है, जो कि गृह देश होता है। दूसरी ओर, एक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का संचालन क्षेत्र विशाल होता है यानी यह एक ही समय में कई देशों को सेवा प्रदान करता है। घरेलू कंपनियों के उत्पादों और सेवाओं के लिए गुणवत्ता मानदंड आमतौर पर कम होते हैं। दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों की गुणवत्ता की आवश्यकताएं बहुत अधिक होती हैं, जो वैश्विक मानदंडों के अनुसार निर्धारित की जाती हैं। घरेलू व्यापार जिस देश में स्थित है, उसकी मुद्रा में अपना संचालन करता है। दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार विभिन्न मुद्राओं में संचालित होता है। विदेशी कम्पनियों की तुलना में घरेलू व्यापार में बहुत कम पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है। घरेलू व्यापार न्यूनतम बाधाओं के अधीन है, क्योंकि यह एक ही देश के कानूनों और करगणन द्वारा शासित होता है। दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कई देशों के नियमों, कानूनों, करों, शुल्कों और कोटा के अधीन है और परिणामस्वरूप, यह कई सीमाओं के अधीन है, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बाधा के रूप में कार्य करते हैं। घरेलू व्यवसाय में ग्राहक कमोबेश एक जैसे ही होते हैं। इसके विपरीत, अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के पास प्रत्येक देश से विविध प्रकार के ग्राहक होते हैं। घरेलू फर्म में, बाजार अनुसंधान करना सरल है। इसके विपरीत, अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान में व्यावसायिक अनुसंधान करना चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि यह महंगा है और अनुसंधान की विश्वसनीयता देश-दर-देश अलग-अलग होती है। घरेलू कंपनियों में उत्पादन के कारक गतिशील होते हैं, लेकिन विदेशी व्यापार में वे सीमित होते हैं।

प्रश्न 2. वणिकवाद पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर-वणिकवाद से अभिप्राय उस आर्थिक विचारधारा से है, जो पश्चिमी यूरोप के देशों में विशेषकर फ्रांस, इंग्लैण्ड और जर्मनी में 16वीं और 17वीं शताब्दी में प्रसारित हुई थी और 18वीं शताब्दी के मध्य तक इसका अत्यधिक विकास हुआ। वणिकवाद की धारणा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और उससे प्राप्त धन से संबंधित है।